ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 279-281

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

कोरोना (COVID – 19) का वैश्विक प्रभाव

ममता मणि त्रिपाठी
एसोसिएट प्रोफेसर– राजनीति शास्त्र विभाग,
बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुशीनगर (उ. प्र.), भारत

Received- 27.06.2020, Revised- 29.06.2020, Accepted - 02.07.2020 E-mail: rkshapur2@gmail.com

सारांश : ***कोरोना वायरस एक ऐसा वायरस है, जिससे सामान्य जुकाम , सर्दी से लेकर गंभीर बीमारी जैसे सार्स और मर्स होते हैं । कोरोना वायरस का वर्तमान संक्रमण चीन के बुहान शहर से और आज विश्व के अधिकांश देश इस आपदा से संकमित है । जनसंख्या का अनुपात देखा जाए तो ऊँचें जनघनत्व के बावजूद भारत में इसका प्रकोप अभी कम है। अमेरिका में जो अनुपात 1417 व्यक्ति प्रति दस लाख है, वहीं भारत में कोरोना के मरीजों की संख्या 5 व्यक्ति प्रति दस लाख है । जहाँ प्रभावित क्षेत्र में कोरोना का प्रकोप थमने का नाम नही ले रहा है। वहीं भारत में कोरोना के मरीजों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है । भारत ने विश्व को यह बता दिया है कि भारत आशाओं की अनुभूति को हर पल जिंदा रखने वाला देश है ।***

कुंजीभूत शब्द– सार्स, मर्स, कोरोना वायरस, संक्रमण, राहत , आपदा, जनसंख्या,अनुपात, जनघनत्व, अनुभूति।

संयम, सेवा, समर्पण, सहयोग, संतुष्टि, संकल्प का विलक्षण संयोग भारत वासियों में है, जो कठिनाइयों से अवसाद में जाने के बजाय नये रास्तों पर आगे बढ़ने का अवसर तलाश लेते हैं। कोविड –19 के खिलाफ इस महायुद्ध में अमेरिका और यूरोप के देशों जैसी दुनिया की शीर्ष महाशक्तियाँ लाचार नजर आ रही हैं। स्वास्थ्य और सम्पन्नता के विश्व स्तरीय मॉडल निरीह और बेबस नजर आ रहे हैं। भारत के साथ संतोष और राहत की बात है। हम और हमारा देश अदृश्य परजीवी के खिलाफ दुनिया के तमाम शक्तिशाली देशों की तुलना में बेहतर स्थिति में लड़ रहे हैं। अमेरिका तथा ब्राजील जैसे शक्ति सम्पन्न देश भारत से मदद माँग रहें हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन को कोविड –19 के विरुद्ध भारत के कदमों में उबरने की आय दिख रही है। दुनिया के श्रेष्ठ चिकित्सा प्रणाली वाले इटली और अमेरिका की स्थिति देखने के बाद यह वैश्विक संगठनों के लिए चकित करने वाली बात है कि भारत इस वायरस पर तुलनात्मक रुप से कैसे नियन्त्रण कर सका है। इस वैश्विक आपदा की स्थिति में जहाँ एक ओर युद्ध स्तर पर बचाव के लिए प्रयास किया जा रहा है वहीं दूसरी ओर First World Countries के बीच इस वायरस की उत्पत्ति को लेकर आरोप प्रत्यारोप का दौर भी प्रारंभ हो गया है। वर्तमान में चीन के हुबई प्रांत के बुहान शहर को कोरोना वायरस के केन्द्र के रुप में देखा जा रहा था परन्तु चीन के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका में कोरोना संबंधी दावे ने विश्व राजनीतिक व्यवस्था में नई बहस को जन्म दिया है। अमेरकि ने इसे बुहान वायरस के रुप में परिभाषित किया। ऐसा भी मानना है कि चीन का बेल्ट एण्ड रोड इनिशिएटिव प्रोजेक्ट जिसका विस्तार चीन से यूरोप और एशिया महाद्वीप के विभिन्न देशों तक है इस वायरस के प्रसार का प्रमुख वाहक है। ईरान जो चीन का करीबी था उसने भी अमेरिकी प्रभुत्व वाले अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की सहायता की अपील कर विश्व राजनीति के बदलने के संकेत दिये हैं। इटली ने भी प्रोजेक्ट समेत चीन के साथ अपनी सभी आर्थिक गतिविधियों को रोक दिया। यूरोप के कई देशों ने चीन के साथ आर्थिक गतिविधियों पर प्रतिबंध लगा दिया है अमेरिका का आरोप है कि वायरस के बारे में जानकारी होने के बावजूद चीन ने इस बात को छुपाया है। चीन की पुलिस ने करोना के खिलाफ बोलने वाले 8 डाक्टरों को अपनी गिरफ्त में ले लिया था । वर्ष 2002–2003 में कहर बरपाने वाला सार्स भी चीन से ही निकला था । कोरोना संकट के साये में अमेरिका और चीन जैसी दो वैश्विक महाशक्तियों के बीच टकराव से वैश्विक राजनीति पर गंभीर प्रभाव होने की आशंका व्यक्त की जा रही है। इसका पहला प्रभाव अमेरिका तथा चीन के बीच व्यापार समझौते पर होगा। नवम्बर 2020 में अमेरिकी राष्ट्रपति के चुनाव में भी करोना वायरस का प्रभाव होगा। इस आपदा ने ईरान और अमेरिका को नजदीक ला दिया। कोरोना वायरस के केन्द्र के रुप में चीन के विख्यात होने से दुनिया भर में चीन के लोगों के साथ नस्लीय भेदभाव में इजाफा होने की आशंका है। जर्मनी की चान्सलर समेत यूरोप महाद्वीव के अन्य प्रमुख नेताओं का मानना है कि कोरोना वायरस के प्रभाव से पूरे महाद्वीप में प्रथम विश्व युद्ध के बाद उत्पन्न हुए आर्थिक संकट जैसी परिस्थियि निर्मित हो सकती है। कोविड –19 महामारी

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

आने वाले समय में विश्व व्यवस्था को कई रुप में बदलने जा रही है। यह संयुक्त राष्ट्र को भी प्रभावित करती नजर आ रही है। चीन द्वारा – विश्व स्वास्थ्य संगठन का इस्तेमाल जानकारियों को छुपाने और महामारी के शुरुआती केन्द्र होने से बनने वाली गलत छवि से बचाने के लिए किया जाने वाला प्रयास निःसंदेह खतरनाक है। अमेरिकी राष्ट्रपति पहले ही विश्व स्वास्थ्य संगठन को आर्थिक सहयोग रोकने के बारे में बयान देकर उसे चीन द्वारा कोरोना वायरस संबंधी गलत जानकारी का आरोप लगा कर अपने विरोध को प्रदर्शित किया है। अमेरिकी राष्ट्रपति ने चायना वायरस के नाम से प्रकाशित किया। अमेरिका समेत विश्व के कई राष्ट्र चीन से वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में आ रही गिरावट से मुआवजे का दावा करने के मामले में चीन के खिलाफ नजर आ रहे हैं जिससे बड़े पैमाने पर आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। कुछ दिन पहले ही जापान सरकार ने अपनी कंपनियों को चीन में अपनी निर्माण इकाइयों को हमेशा के लिए बंद करने के फैसले के चलते 22 विलियन डॉलर का मुआवजा आबंटन भी किया है। कोरोना महामारी तो बहुराष्ट्रीय त्रासदी है लेकिन इस त्रासदी ने विशेषकर हम भारतीय नें अनेक सीख दी है। बसुधैव कुटुम्बकम की उदार नीति ने भारत को विश्व में आज एक नयी पहचान दी है। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पहल पर इस त्रासदी के बीच विश्व के अनेक देशों को हाइड्रो क्लोरोक्वीन सहित अनेक दवाओं की सप्लाई हो रही है । विश्व संकट के इस काल में अपने देश का नेतृत्व करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सार्क देशों और जी –20 देशों की अगुवाई की है। अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, ब्राजील जैसे देशों के राष्ट्राध्यक्षों ने प्रधानमंत्री मोदी को बधाई दी अपितु भारत का आभार व्यक्त किया। कोरोना वायरस का विश्व की आर्थिक व्यवस्था पर व्यापक रुप से प्रभाव पड़ेगा। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ने एक अध्ययन में कहा है कि वैश्विक स्तर पर एक समन्वित नीति बनती है तो नुकसान को काफी हद तक कम किया जा सकता है। दुनिया भर में तेजी के साथ फैल रहे घातक कोरोना वायरस में वैश्विक अर्थव्यवस्था को बुरी तरह से प्रभावित किया है। इसके चलते वस्तुओं एवं सेवाओं की मांग और आपूर्ति दोनों पर असर पड़ा है। अंतर्राष्ट्रीय कच्चे तेलों की कीमत पर 50 प्रतिशत से ज्यादा की गिरावट आ चुकी है।

इस तथ्य को नजरअंदाज नही कर सकते हैं कि चीन और दुनिया के अन्य देशों में कोविड –19 के प्रकोप से वैश्विक स्तर पर आर्थिक मंदी, व्यापार, सप्लाई चीन का व्यवधान वस्तुओं सहित अर्थव्यवस्था पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ने की उम्मीद है। नवीनतम संयुक्त राष्ट्र व्यापार रिपोर्ट के अनुसार भारत एवं चीन के अपवाद के साथ विश्व व्यवस्था कोरोना वायरस महामारी के कारण मंदी में चली जायेगी। कोरोना वायरस संकट का सबसे बड़ा प्रभाव समूची दुनिया में राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक उथल – पुथल के रुप में नजर आया। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) का अनुमान है कि लगभग 1.25 अरब कामगार यानि वैश्विक श्रम का लगभग 38 प्रतिशत हिस्से के रोजगार पर संकट आ रहा है । दुनिया भर के शेयर बाजार गिर गये हैं। अमेरिका तथा यूरोप में सबसे ज्यादा लोग शिकार बने है वे इस प्रकोप से बचने के लिए ठीक तौर पर तैयार नही है। वे इस प्रकोप से बचने के लिए ठीक तौर पर तैयार नही हैं। कोरोना संकट ने एक बार फिर बहुपक्षवाद की कमजोरियाँ उजागर कर दी है । जब से संकट गहराया है ज्यादातर देश अपने ही भरोसे हैं। अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की बात हर कोई करता है लेकिन अधिकतर बड़े देश पहले मैं की नीति पर चलते हैं। कोरोना की बाद की दुनिया में राष्ट्रवाद या अतिराष्ट्रवाद बढने की अपेक्षा की जा सकती है।दुनिया को नौकरिया बचाने, अर्थव्यवस्था के संकट में पड़े क्षेत्रों को बढ़ावा देने और सबसे गरीब तथा वंचित तबकों की आजिविका की समस्या हल करने के लिए वैश्विक योजना की जरुरत है। वैश्वीकरण के कारण राष्ट्रों के बीच असमानता पैदा कर दी है। बार – बार प्राकृतिक आपदाओं के कारण देश बरबाद होते जा रहे हैं। मानव व जंतुओं के बीच घनिष्ठता के कारण जन्में कोरोना वायरस ने विकास के उपभोक्तावादी मॉडल की कमजोरी उजागर कर दी है। केन्द्र सरकार ने कोरोना वायरस के संक्रमण में लोगों के इलाज में लगे डाक्टरों पैरामेडिकल कर्मियों, चिकित्सा सेवा कर्मियों को 30 लाख रुपये प्रति परिवार का बीमा कवर दिया जायेगा। 80 करोड़ परिवारों को 1.70 लाख करोड़ रुपये देने की घोषणा की गयी है । मनरेगा की दैनिक मजदूरी बढ़ा दी गयी है। प्रधानमंत्री किसान योजना के तहत 8.69 करोड़ किसानों को अप्रैल के पहले सप्ताह में दो – दो हजार की अग्रिम किस्त का भुगतान किया गया है।

63 लाख महिला स्वयं सेवक समूहों के लिए रेहन मुक्त कर्ज दो गुना कर 20 लाख रुपये किया गया । कुल 1.7 लाख करोड़ रुपये के राहत पैकेज का क्रियान्वयन तत्काल प्रभाव से होगा । ब्रिक्स सदस्य देशों के विदेश मंत्रियों की ऑनलाइन बैठक में विदेश मंत्री ने यह बताया था कि दुनिया के तकरीबन 85 देशों को कोविड –19 से उबरने में मदद के लिए दवा मुहैया करा रहा है । यह मदद भी बतौर अनुदान करायी जा रही है । यह भारतीय नेतृत्व की ही देन है । भारत को इस संकट से मुक्ति पाने के लिए

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

दो कार्य करने चाहिए 1. विश्व व्यापार पर अपनी निर्भरता घटानी चाहिए जैसी फिलहाल है और यदि संभव हो तो इसे और कम करना चाहिए। 2. अपनी घरेलू बचत दर बढ़ानी चाहिए, आर्थिक विकास को हासिल करने के लिए जनता को अधिकाधिक खपत करने के लिए प्रात्साहित करने के स्थान पर जनता को अधिकाधिक खपत के लिए प्रात्साहन देना चाहिए जिससे हमारा आर्थिक सुरक्षा कवच बना रहे। कोरोना वायरस के कारण जैव आतंकवाद पर भी चर्चा होने लगी है। आज भारत में भी कोरोना का संक्रमण जब फैलने लगा है ऐसी स्थिति में यह सोच विकसित करने कीजरुरत है कि अब भारत को कच्चे माल के लिए चीन पर निर्भरता कम करनी चाहिए और अंतर्राष्ट्रीय एवं स्वदेशी पर आधारित अर्थव्यवस्था तैयार करनी चाहिए। दूसरा अपनी विशाल जनसंख्या के साथ भारत के पास स्वास्थ्य , शिक्षा, कृषि, स्वच्छता, तकनीक, पर्यावरण संरक्षण में भारी संभावनाएँ है। इसका इस्तेमाल भारत के पुनर्निमाण में होना चाहिए। विकास का भारतीय मॉडल भारत की वास्तविकता एवं सतत विकास के सिद्धान्तों पर आधारित होना चाहिए। तीसरा भारत की सामाजिक सुरक्षा व्यवस्थाओं में खामियाँ उजागर कर दी है जिन पर फौरन काम होना चाहिए। भारत के पास अब बुनियादी आय, स्वास्थ्य, सेवा, शिक्षा आदि के इर्द गिर्द अपनी सामाजिक सुरक्षा व्यवस्था खड़ा करने का मौका है। चौथा– संकट फैलने के साथ कई अन्य देशों के उलट भारत ने वास्तव में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का रास्ता अपनाया है। पड़े दक्षेय को फिर सक्रिय करने की प्रधानमंत्री मोदी के प्रयास की किसी को अपेक्षा नही थी। भारत का औषधि क्षेत्र, हाइड्रोक्लोरोक्वीन की गोलियाँ बनाने तथा पूरी दुनिया को मुहैया कराने के लिए तैयार हो गया। यही समय है जब भारत को दूसरे देशों के साथ सार्थक संवाद तथा सहयोग तेज करना चाहिए तथा नयी विश्व व्यवस्था गढ़ने में मदद करनी चाहिए। कोरोना वायरस की इस महामारी ने बड़े भयंकर तरीके से हमें इस बात का एहसास कराया है कि वैश्विक अव्यवस्था के कैसे कुपरिणाम मानवता को भुगतने पड़ सकते हैं यह एक चेतावनी है तथा राष्ट्रीय संप्रभुता के आवेग में देशों को अपनी वैश्विक जिम्मेदारियों से मुँह नही मोड़ना चाहिए जब ये महामारी खत्म हो जायेगी तो दुनिया को ये सबक सीखना होगा कि आरिक्त हुआ क्या था विश्व व्यवस्था में क्या कमियाँ हैं। अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था और संस्थाओं को किस तरह से आधारभूत रुप से सुधार कर मजबूत किया जा सकता है ताकि भविष्य में दुनिया को ऐसे संकट का विखराव के साथ सामना न करना पड़ना पडें भारत ने अपने कूटनीतिक बल का संतुलित इस्तेमाल करके जरुर दिखाया है। आने वाले समय में किसी अन्य वैश्विक संकट के वक्त भारत अपनी व्यापक भूमिका निभाने के लिए निश्चित रुप से तैयार है और ये भूमिका बिना मकसद होगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. https : /m-patrika-com/amp&news/opinion/ coronavirus epidemic & possibilitiey & of superpower & conflict between us and china & 6023178.
2. Covid19, coronavirus, Role of Indian in fighting corona 344 BUCT 6 April 2020 .
3. https : www-orfonline-org/hindi/research/ covid&19 indus role in chaos and new world order & 64264 / .
4. https : www-chishtias-com/hindi/daily/up dates/daily news & editorials / belt & and road initative project in crisis.

*****